# Mount Abu Public School

H-Block, Sector-18, Rohini, New Delhi-110085 India

कक्षा – नौवीं

फरवरी मासिक पाठ योजना

विषय -हिंदी

उपविषय –दुख का अधिकार

एवरेस्ट मेरी पहली यात्रा

धर्म की आड़

अतिथि तुम कब जाओगे

गिल्लू

स्मृति

कल्लू कुमार की उनाकोटी

शिक्षण सहायक सामग्री – एनसीईआरटी भारतीय पुस्तक, संचयन और स्पर्श, सहायक वीडियो

सहायक निर्देशन सामग्री –

https://youtu.be/5icSL-pl-bQ

https://youtu.be/9mRiVdP9Ado

https://youtu.be/SR0sgkAhqxQ

https://youtu.be/yi67AdHcMpg

https://youtu.be/CODmRSh7vHs

## दुःख का अधिकार सारांश

इस कहानी का प्रमुख पात्र एक तेईस साल का युवक है जिसका नाम 'भगवाना' है। उसके पास डेढ़ बीघा जमीन है और वह उस जमीन में सब्जियाँ उगाकर अपने परिवार का भरण-पोषण करता है। वह जब तक जीवित था, अपने परिवार के सभी सदस्यों को (जिनमें उसकी माँ, पत्नी और बच्चे हैं) कमाकर खिलाता था। एक दिन भगवाना अपने खरबूजे के खेत में इधर-उधर घूम रहा था। खरबूजे जहाँ रखे हुए थे, वहाँ पर तरावट थी। संयोग

से उस समय उसका पैर साँप पर पड़ गया और साँप ने उसे डस लिया। उसकी माँ ने अपने बेटे को बचाने के लिए झाड़-फूंक, ओझा, नागदेव की पूजा कराई लेकिन भगवान नहीं बचा।

उसकी अंतिम क्रिया करम के लिए घर में बचा हुआ सारा पैसा और सारा अनाज लग गया। दूसरे दिन सुबह भूखे बच्चों को खरबूजे खिलाई और बुखार से तपती बहू के लिए भोजन जुटाने के लिए वह बाज़ार में खरबूजे लेकर बेचने के लिए बैठ गई। सूतक में भी उस अधेड़ उम्र की औरत को खरबूज़े बेचते हुए देखकर लोग उस गरीब बुढ़िया को ताने देने लगे। लोग उसकी इस विशिता पर विचार किए बिना ही उसे बेहया और निष्ठुर कहने लगे।

लेखक कहानी के उत्तरार्ध में पड़ोस की एक धनी महिला पुत्र के शोक की चर्चा करते हुए कहते हैं कि वह ढाई महीने तक डॉक्टरों की देख-रेख में रहने पर भी हर पंद्रह मिनट में बेहोश होकर गिर जाती थी। लोग उसके प्रति सहृदयता से भर उठे थे। शोक की प्रकृति में वर्ग भेद नहीं होता। इस सत्य से परिचित होकर भी लोगों ने मात्र वर्ग भेद के आधार पर उस गरीब बुढ़िया के दुख को किसी ने नहीं समझा।

# एवरेस्ट मेरी शिखर यात्रा पाठ का सारांश

लेखिका बचेंद्री पाल एवरेस्ट विजय के जिस अभियान दल में एक सदस्य थीं, लेखिका उस अभियान दल के साथ 7 मार्च, 1984 को दिल्ली से काठमांडू के लिए हवाई जहाज़ से गयी। एक मजबूत अग्रिम दल हमारे पहुचने से पहले 'बेस कैम्प' पहुँच गया जो उस उबड़-खाबड़ हिमपात के रास्ते को साफ कर सके,लेखिका एक स्थान का जिक्र किया जिसका नाम नमचे बाज़ार है और वहाँ से एवरेस्ट की प्राकृतिक छटा का बहुत सुंदर निरीक्षण किया जा सकता है। लेखिका ने बहुत भारी बड़ा सा बर्फ का फूल (प्लूम) देखा जो उन्हें आश्चर्य में डाल दिया। लेखिका केअनुसार वह बर्फ़ का फूल 10 कि.मी. तक लंबा हो सकता था।

इस अभियान दल के सदस्य पैरिच नामक स्थान पर 26 मार्च को पहुँचे, जहाँ से आरोहियों और काफ़िलों के दल पर प्राकृतिक आपदा मँडराने लगी। यह संयोग की बात था कि 26 मार्च को अग्रिम दल में शामिल प्रेमचंद पैरिच लौट आए थे। उनसे खबर मिली कि 6000 मी. की ऊँचाई पर कैंप-1 तक जाने का रास्ता पुरी तरह से साफ़ कर दिया गया है। दूसरे-तीसरे दिन पार कर चौथे दिन दल के सदस्य अंगदोरजी, गगन बिस्सा और लोपसांग साउथ कोल पहुंच गए। 29 अप्रैल को 7900 मीटर की ऊँचाई पर उन लोगों ने कैंप-4 लगाया। लेखिका 15-16 मई, 1984 को बुद्ध पूर्णमा के दिन ल्होत्से की बर्फीली सीधी ढलान पर लगाए गए सुंदर रंग के नाइलोन के बने टेंट के कैंप-3 में थी। कैंप में 10 और व्यक्ति थे। साउथ कोल कैंप पहुँचने पर लेखिका ने अपनी महत्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी शुरू कर दी। सारी तैयारिओं के बीच अभियान चल रही थी , पर्वतारोही दल आगे बढ़ता रहा और 23 मई, 1984 दोपहर के एक बजकर सात मिनट पर लेखिका एवरेस्ट की चोटी पर पहुँच गई।

# तुम कब जाओगे अतिथि सारांश

लेखक के घर में एक अतिथि आए हैं। उस आये हुए अतिथि के सेवा-सत्कार में लेखक और उनकी पत्नी ने अपनी ओर से कोई कमी नहीं की है। यह सेवा-सत्कार इसलिए किया गया है कि अतिथि आने के बाद तुरंत चले जाये। परन्तु यह अतिथि नहीं जा रहे हैं। लेखक को अब शंका हो रही है कि अतिथि अब न जाने कितने दिन और रूकेंगे। लेखक अतिथि के थोड़े दिन और रुक जाने की आशंका से डर ही रहे थे कि अतिथि ने और कुछ दिन रुक जाने का संकेत दे दिया। अतिथि ने अपने कपड़े गंदे होने की बात कही और उस गंदे कपड़े को धुलाई के लिए धोबी को देने की चर्चा की। लेखक को इस बात से गुस्सा तो बहुत आया लेकिन लॉण्ड्री से कपड़े धुलाकर लाना ही सही समझा। लेकिन अब भी अतिथि वहाँ से चले जाएँगे, इसकी कोई गारंटी न थी। लेखक और उनकी पत्नी अतिथि से बहुत परेशान हो चुके थे।

कल तक जिस अतिथि के प्रति यह भाव था कि अतिथि देवता के समान होते हैं, अब उस अतिथि के प्रति यह स्थिति हो गई है कि वह राक्षस प्रतीत होने लगे है। इस व्यंग्य के माध्यय से लेखक ने आज के अतिथियों की निर्लिज्जता की परिस्थिति को स्पष्ट किया है। सम्मान माँगने से नहीं मिलता बल्कि सम्मानित व्यक्ति के साथ जैसा आचरण किया जाता है तब उस व्यक्ति के व्यवहार से मुग्ध होकर अन्य लोग स्वयं ही उस व्यक्ति को सम्मान देते हैं।

लेखक ने यह भी दिखाया है कि थोड़े दिन के लिए आये अतिथि शानदार स्वागत के भागीदार होते हैं, लेकिन अत्यधिक समय के लिए आये अतिथि के आतिथ्य का सुख-भोग करने का जिनका इरादा होता है वैसे अतिथि का मेजबान द्वारा आदर सम्मान नहीं होता हैं।

लेखक ने एक और बात बतायी है कि दूसरों के घर में रहकर आदर-सत्कार प्राप्त करना सभी को अच्छा लगता है। इसका मतलब यह नहीं है कि सभी लोग अपना घर छोड़कर दूसरे के घर में ही रहना शुरू कर दें। लेखक ने यह भी बताया है कि अतिथि के घर इज्जत मिलने का यह मतलब नहीं कि इज्जत जहाँ मिले, वहाँ और सिर चढ़ जाए। इज्जत कभी भी माँगने से प्राप्त नहीं होती है। यदि अतिथि को बिना माँगे इज्जत चाहिए तो उन्हें यह सावधानी बरतनी होगी कि थोड़े ही समय में ही किसी के घर का दरवाज़ा छोड़ दें। अतिथि द्वारा फूहड़ आचरण किए जाने का गलत परिणाम एक दिन यह भी हो सकता है कि मेज़बान द्वारा उन्हें 'गेट आउट' भी कह दिया जाये। यह व्यंग्य-रचना सही मायने में मेहमान और मेज़बान की संयुक्त आचार संहिता है।

# गिल्लू पाठ का सारांश

इस प्रस्तुत पाठ में एक चंचल तथा तेज गति से दौड़ने वाली जीव जो गिलहरी है, उससे लेखिका के अद्भुत प्रेम का परिचय मिलता है। गिलहरी का एक छोटा-सा बच्चा शायद घोंसले से गिर गया है जिस पर नासमझ कौए टूट पड़े हैं। कौए उसके शरीर में अपना आहार ढूँढने की चेष्टा में हैं। लेखिका की दृष्टि अनायास उस नवजात बच्चे पर पड़ी, जिसे वह बचाने का पूरा प्रयास करने लगीं। लेखिका ने ध्यान से उस नवजात गिलहरी को देखा तो कौए की चोंच के दो निशान मिले। यदि लेखिका उसका उपचार सही ढंग से नहीं करती तो शायद गिलहरी का यह बच्चा जीवित नहीं रहता।

लेखिका उस गिलहरी को जिंदा रखने के लिए रुई की पतली बत्ती को दूध में भिगोकर उसके मुँह में दूध डालने लगी। पहले वह जीव मरने के समान दिख रहा था लेकिन लेखिका की सेवा से वह धीरे-धीरे स्वस्थ हो गया। लगभग तीन दिन होते-होते वह जीव अपने पंजे हिलाने की स्थिति में आ गया और लेखिका की उँगली अपने पंजे से पकड़ने लगा।

लेखिका ने उसे एक डलिया में रखना शुरू किया। लेखिका ने उस गिलहरी की देखभाल इतनी अच्छे से की कि वह गिलहरी अब दो वर्ष का हो गया। लेखिका ने उस गिलहरी का नाम 'गिल्लू' रखा जो उनके पैरों पर चढ़ जाता था और सर से उतरकर भाग भी जाता था। गिल्लू अपनी चमकीली आँखों से लेखिका द्वारा किए गए सभी कामों को भी देखा करता था।

लेखिका यह बताना चाहती हैं कि छोटे से छोटे जीव भी मनुष्य के व्यवहार को अच्छी तरह से समझता है। लेखिका के घर से बाहर जाती तो गिल्लू भी दिन भर खिड़की की जाली से बाहर चला जाता लेकिन जैसे ही लेखिका घर आतीं, वह भी घर चला आता और लेखिका से अपना स्नेह जतलाने लगता। वह अब लेखिका के साथ खाना खाने भी चला आता है। लेखिका ने बहुत ही कठिनाई से उसे मेज़ पर रखी भोजन की थाली के पास बैठना सिखाया, इसका भी यहाँ वर्णन किया गया है। उस छोटे से जीव का सबसे प्रिय भोजन काजू था।

लेखिका के बीमार होने पर गिल्लू लेखिका के सिरहाने बैठकर अपने पंजे को हलका-हलका उनके सिर फेरता जिससे लेखिका को ऐसा लगता कि मानो कोई सेविका यह काम कर रही हो।

गिल्लू भी अपनी स्वाभाविक मौत से मरा था। किंतु उसके मरने से कुछ समय पहले लेखिका ने हीटर जलाकर उसके बदन को सेंका। उसमें गर्मी पैदा करने की कोशिश की, लेकिन लेखिका उस प्यारे गिल्लू को बचा नहीं पाईं। सोनजुही की लता के नीचे मिट्टी में ही गिल्लू की समाधि बना दी। उसे सोनजुही की लता काफ़ी पसंद था, इसलिए लेखिका ने उसे उसी सोनजुही की जड़ के नीचे चिरनिद्रा में सुला दिया। छोटे-से छोटे जीव के प्रति भी लेखिका का ममत्व एवं स्नेह इस कहानी से स्पष्ट होता है।

**स्मृति'**

**स्मृति'** कहानी के शीर्षक द्वारा यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत कहानी लेखक को जीवन भर याद रही। इस कहानी में लेखक और उनके छोटे भाई दोनों ही खेल-कूद में व्यस्त हैं। उन व्यस्तता के क्षणों में ही एक आवाज़ दूर से आती है। एक आदमी ज़ोर से चिल्लाकर लेखक का नाम लेकर पुकारता है और यह संकेत देता है कि बड़े भाई साहब ने उसे बुलाया है। लेखक का हृदय बड़े भाई से पिटने की आशंका से भयभीत हो रहा है। लेखक तुरंत वहाँ से खेल छोड़कर आते हैं और डरते हुए घर में जाते हैं। जब बड़े भाई साहब को लेखक कुछ लिखने में व्यस्त देखते हैं, तब उन्हें तसल्ली होती है कि आज मार खाने की परिस्थिति नहीं बन रही है। लेखक को बड़े भाई से आदेश मिलता है कि ये कुछ चिट्ठियाँ है इनको मक्खनपुर पोस्ट ऑफ़िस में जाकर डाल आना। लेखक तत्क्षण तैयार हो जाते हैं और अपने साथ अपने छोटे भाई को और अपना एक डंडा भी ले लेते हैं। लेखक उस लाठी को नारायण वाहन मानते हैं। आगे जो घटनाक्रम प्रस्तुत है उसमें सचमुच वह लाठी नारायण-वाहन के रूप में सिद्ध होती है।

लेखक काफ़ी तेजी से दौडते हुए मक्खनपुर की ओर छोटे भाई के साथ चल पडते हैं। दोनों भाई एक ही साँस में गाँव से चार फर्लांग दूर उस कुएँ के पास आ जाते हैं जिसमें एक भयंकर साँप रहता है। वह कुआँ कच्चा है और चौबीस हाथ गहरा है। दोनों भाई उस कुएँ पर पहुँच जाते हैं। बाल-सुलभ कौतुक के चक्कर में फँस कर दोनों भाई कुएँ में साँप का दृश्य देखने के लिए झाँकने लगते हैं। कुएँ झाकने के लिए सिर पर रखी टोपी को बार-बार उतारना पडता है जिसमें चिट्ठियाँ सुरक्षित रखी गई|

# कल्लू कुम्हार की उनाकोटी सारांश

लेखक दिसंबर महीने के सन् 1999 में त्रिपुरा की राजधानी अगरतला गए थे। वहाँ लेखक को 'ऑन द रोड' शीर्षक से तीन खंडों वाली एक टी.वी. शृंखला बनाना था। लेखक का इस यात्रा के पीछे जो बुनियादी विचार था, वह त्रिपुरा की पूरी लंबाई में आर-पार जाने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग-44 से यात्रा करना और त्रिपुरा से सम्बन्धित विकास की सभी गतिविधियों के बारे में जानकारी देना था।

भारत के सबसे छोटे राज्यों में से एक त्रिपुरा राज्य है। इस राज्य की जनसंख्या वृद्धि दर 34 प्रतिशत है, जो बहुत ज्यादा है। यह त्रिपुरा राज्य बांग्लादेश से तीन तरफ़ से घिरा हुआ है और बाकी भारत के दो राज्य मिजोरम और असम (उत्तर-पूर्वी सीमा) से घिरा हुआ है। बेलोनिया, सबरूम, कैलासशहर, सोनामुरा ये सब त्रिपुरा के महत्वपूर्ण शहर हैं, जो बांग्लादेश की सीमा के काफ़ी नजदीक हैं। अगरतला सीमा चौकी से करीब दो किलोमीटर ही दूर है। यहाँ बांग्लादेश के लोगों का अवैध आना जाना भी बहुत ज्यादा है। यहाँ पर बाहरी लोगों की जनसंख्या इतनी ज्यादा हो गई है कि यहाँ के मूल निवासी आदिवासियों की संख्या उसके मुकाबले कम होती जा रही है। इसी कारण त्रिपुरा के आदिवासियों में असंतोष बढ़ता जा रहा है। लेखक अपना पूरा यात्रा-वृत्तांत सुनाने में पहले तीन दिनों की चर्चा करते हैं, जो अगरतला के इर्द-गिर्द ही शूटिंग की गई थी। इसी दौरान लेखक ने 'उज्जयंत महल' की भी चर्चा की जो अगरतला का मुख्य महल है और अब उसी महल में त्रिपुरा की राज्य विधानसभा बैठती है। लेखक यह बताते हैं कि त्रिपुरा में लगातार बाहर के लोगों के आने से कुछ समस्याएँ तो पैदा हुई हैं, लेकिन इससे यह लाभ भी हुआ है कि राज्य बहुधार्मिक समाज का उदाहरण बन गया है। त्रिपुरा में उन्नीस अनुसूचित जनजातियों पायी जाती है और यहाँ विश्व के चारों बड़े धर्मों का प्रतिनिधित्व भी मौजूद है।

अगरतला के बाद लेखक टीलियामुरा का वर्णन करते हैं। यह एक कस्बा है जो कि एक बड़ा-सा गाँव ही है। यहीं पर लेखक की मुलाकात त्रिपुरा के एक प्रसिद्ध लोकगायक हेमंत कुमार जमातिया से होती है, जिन्हें सन् 1906 ई. में संगीत के क्षेत्र में नाटक अकादमी पुरस्कार मिल चुका है। हेमंत कोकबारोक बोली में गीत गाते हैं, जो त्रिपुरा की कबीलाई बोलियों में से एक है। वहीं टीलियामुरा शहर के वार्ड नं. 3 में लेखक की मुलाकात एक और गायक मंजु ऋषिदास से होती है। ऋषिदास त्रिपुरा में पाये जाने वाले मोचियों (जूते बनाने वालों) के एक समुदाय का नाम है। इस समुदाय के लोग जूते बनाने के साथ-साथ तबला और ढोल का बानने का भी काम करते हैं। मंजु ऋषिदास एक आकर्षक महिला थीं और वह रेडियो कलाकार होने के साथ-साथ नगर पंचायत में अपने वार्ड का प्रतिनिधित्व भी करती थीं। उन्होंने लेखक के लिए दो गीत भी गाए थे।

लेखक ने त्रिपुरा में उपस्थित प्राकृतिक दृश्यों की छटा का वर्णन करते हुए यह कहा है-"त्रिपुरा की प्रमुख नदियों में से एक मनु नदी है जिसके किनारे स्थित एक छोटा कस्बा मनु है। जिस वक्त हम मनु नदी के पार जाने वाले पुल पर पहुंचे थे, तभी सूर्य मनु के जल में अपना सोना उडेल रहा था।" लेखक त्रिपुरा जिले में जब प्रवेश कर गए तो उन्होंने वहाँ की लोकप्रिय घरेलू गतिविधियों में से एक-अगरबत्तियों के लिए बनायी जाने वाली बाँस की पतली सीके तैयार करने वाले घरेलू उद्योग का भी मुआयना किया। बाँस की इन पतली सीकों को अगरबत्तियाँ बनाने के लिए कर्नाटक और गुजरात भेजा जाता है। उत्तरी त्रिपुरा जिले का मुख्यालय कैलासशहर है, जो बांग्लादेश की सीमा के काफी करीब है।

त्रिपुरा में एक स्थान है जिसका नाम 'उनाकोटी' है, जिसके बारे में लेखक कुछ भी नहीं जानते थे। लेखक को उस जगह की विशेष जानकारी वहाँ के जिलाधिकारी से प्राप्त होती है। उनाकोटी का मतलब होता है एक कोटि यानी कि एक करोड़ से एक कम। इस दंतकथा के अनुसार उनाकोटी में शिव जी की एक करोड़ से एक कम मूर्तियाँ पायी जाती हैं। विद्वानों का मानना है कि यह जगह दस वर्ग किलोमीटर से कुछ ज्यादा क्षेत्र में फैली है और पाल शासन के दौरान नवीं से बारहवीं सदी तक के तीन सौ वर्षों में यहाँ चहल-पहल रहा करती थी। पहाड़ों को अंदर से काटकर यहाँ पर बड़ी-बड़ी आधार की मूर्तियाँ बनी हैं। एक विशाल चट्टान पर ऋषि भगीरथ की प्रार्थना पर स्वर्ग से पृथ्वी पर गंगा के अवतरण के पौराणिक कथा को चित्रित करती है। गंगा अवतरण के धक्के से कहीं पृथ्वी फँसकर पाताल लोक में न चली जाए, इसलिए शिव जी को इसके लिए तैयार किया गया कि वे अपनी जटाओं में गंगा को उलझा लें और इसके बाद इसे पृथ्वी पर धीरे-धीरे बहने दें। एक पूरे चट्टान पर शिव जी का चेहरा बना है और उनकी जटाएँ दो पहाड़ों की चोटियों पर फैली हुई हैं। शिव जी की यह

भारत में सबसे बड़ी आधार मूर्ति है। पूरे वर्ष बहने वाला एक जलप्रपात पहाड़ों से गिरता है, जिसे गंगा जितना ही पवित्र माना जाता है। यह का पूरा क्षेत्र ही देवी-देवताओं की मूर्तियों से भरा पड़ा है।

स्थानीय आदिवासियों का यह मानना है कि इन मूर्तियों का निर्माता कल्लू कुम्हार था। वह पार्वती जी का सच्चा भक्त था और शिव-पार्वती जी के साथ उनके निवास स्थान कैलाश पर्वत पर जाना चाहता था। पार्वती जी के कोशिश करने पर शिव जी कल्लू को कैलाश पर्वत पर ले जाने के लिए तैयार हो गए लेकिन इसके लिए एक शर्त रखी गई कि उसे एक रात में शिव जी की एक कोटि (करोड़) मूर्तियाँ बनानी होंगी। अपनी धुन का पक्का कल्लू कुम्हार मूर्तियाँ बानने के काम में लग गया। लेकिन जब भोर हुई तो एक कोटि मूर्तियाँ में से एक मूर्ति कम निकलीं। कल्लू नाम की इस मुसीबत से अपना पीछा छुड़ाने के लिए शिव जी ने इसी बात का बहाना बनाते हुए अपनी मूर्तियों के साथ कल्लू कुम्हार को उनाकोटी में ही छोड़ दिया और स्वयं कैलाश पर्वत चलते बने।

उपर्युक्त दंतकथा के आधार पर ही लेखक ने इस पाठ का शीर्षक 'कल्लू कुम्हार की उनाकोटी' रखना उचित समझा। इस शीर्षक से त्रिपुरा के भौगोलिक, सामाजिक वातावरण और धार्मिक दंतकथा पर दृष्टिपात करने में सहायता मिलती है।

मूल्यांकन -

**प्रश्न 1. 'उनाकोटी' का अर्थ स्पष्ट करते हुए बतलाएँ कि यह स्थान इस नाम से क्यों प्रसिद्ध है?**

प्रश्न2 **कल्लू कुम्हार का नाम उनाकोटी के साथ किस प्रकार जुड़ गया?**

**प्रश्न 3 भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखक के मन में किस बात का डर था?**

**प्रश्न 4सोनजुही में लगी पीली कली को देख लेखिका के मन में कौन-से विचार उमड़ने लगे?**

**प्रश्न 5 पाठ के आधार पर कौए को एक साथ समादरित और अनादरित प्राणी क्यों कहा गया है?**

# Mount Abu Public School

H-Block, Sector-18, Rohini, New Delhi-110085 India

कक्षा 9

विषय – हिंदी व्याकरण

उपविषय - अनुस्वार और अनुनासिक

शब्द और पद में अंतर

अर्थ की दृष्टि से वाक्य के भेद

उपसर्ग,प्रत्यय

शब्द विचार- पर्यायवाची शब्द,

विलोम शब्द, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द

शिक्षण उद्देश्य –

- छात्रों को स्वर ज्ञान देना |
- छात्रों को अनुस्वार का अर्थ समझाना |
- छात्रों को अनुनासिक की परिभाषा बताना |
- छात्रों को अनुस्वार अनुनासिक की चिन्हों के परिचिति कराना
- छात्रों का वाक्य के भेद बताना
- छात्रों के साथ अर्थ की दृष्टि से वाक्य के भेदों का विश्लेषण करना
- छात्रों को शब्द और पद में अंतर समझाना
- छात्रों को उपसर्ग और प्रत्यय का प्रयोग बताना
- छात्रों को शब्द भंडार में पर्यायवाची शब्द, श्रुति सम भिन्नार्थक शब्द, अथवा विलोम शब्दों में वृद्धि करवाना

निर्देशन अध्ययन सामग्री –

https://youtu.be/g0aUJfR2Zws

पाठ परिवर्धन-

अनुस्वार के उच्चारण में 'अं' की ध्वनि मुख से निकलती है। हिंदी में लिखते समय इसका प्रयोग शिरोरेखा के ऊपर बिंदु लगाकर किया जाता है। इसका प्रयोग 'अ' जैसे किसी स्वर की सहायता से ही संभव हो सकता है; जैसे - संभव।
इसका वर्ण-विच्छेद करने पर 'स् + अं(अ + म्) + भ् + अ + व् + अ' वर्ण मिलते हैं। इस शब्द में अनुस्वार 'अं' का उच्चारण (अ + म्) जैसा हुआ है, पर अलग-अलग शब्दों में इसका रूप बदल जाता है; जैसे
संचरण = स् + अं(अ + न्) + च् + अ + र् + अ + ण् + अ
संभव = स् + अं(अ + म्) + भ् + अ + व् + अ ।
संघर्ष = स् + अं(अ + ङ्) + घ् + अ + र् + ष् + अ
संचयन = स् + अं(अ + न्) + च् + अ + य् + अ + न् + अ

अनुस्वार प्रयोग के कुछ नियम
अनुस्वार के प्रयोग के निम्नलिखित नियम हैं-

पंचमाक्षर का नियम - जब किसी वर्ण से पहले अपने ही वर्ग का पाँचवाँ वर्ग (पंचमाक्षर) आए तो उसके स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग होता है; जैसे -
गङ्गा = गंगा,
ठण्डा = ठंडा,
सम्बन्ध = संबंध,
अन्त = अंत आदि

(ii) य, र, ल, व (अंतस्थ व्यंजनों) और श, ष, स, ह (ऊष्म व्यंजनों) से पूर्व यदि पंचमाक्षर आए, तो अनुस्वार का ही प्रयोग किया जाता है; जैसे -
सन्सार = संसार,
सरक्षक = संरक्षक,
सन्शय = संशय आदि

ध्यान दें - हिंदी को सरल बनाने के उद्देश्य से भिन्न-भिन्न नासिक्य ध्वनियों (ङ, ञ, ण, न और म) की जगह बिंदु का प्रयोग किया जाए। संस्कृत में इनका वही रूप बना रहेगा।

संस्कृत में - अङ्क, चञ्चल, ठण्डक, चन्दन, कम्बल।

हिंदी में - अंक, चंचल, ठंडक, चंदन, कंबल।

अनुस्वार का प्रयोग कब न करें-
निम्नलिखित स्थितियों में अनुस्वार का प्रयोग नहीं करना चाहिए-

(i)

(ii) यदि अनुस्वार के पश्चात् कोई पंचमाक्षर (ङ, ञ, ण, न, म) आता है, तो अनुस्वार का प्रयोग मूलरूप में किया जाता है। अनुस्वार का बिंदु रूप अस्वीकृत होता है; जैसे -

सम्+हार = संहार
सम्+सार = संसार
सम्+चय = संचय
सम्+देह = संदेह
सम्+ चार = संचार
सम्+भावना = संभावना
सम्+कल्प = संकल्प
सम्+जीवनी = संजीवनी

अनुनासिक

ध्यान दें- अनुनासिक की जगह अनुस्वार और अनुस्वार की जगह अनुनासिक के प्रयोग से शब्दों के अर्थ में अंतर आ जाता है,जैसे -

हँस (हँसने की क्रिया)
हंस (एक पक्षी)।

हैं = ह + एँ
मैं = म् + एँ
में = म् + एँ
कहीं = क् + अ + ह् + ई
गोंद = ग् + ओं + द् + अ
भौकना = भ् + औं + क् + अ + न् + आ
पोंगल = प् + औं + ग् + अ + ल् + अ
जोंक = ज् + औं + क् + अ
शिरोरेखा के ऊपर मात्रा न होने पर इसे चंद्रबिंदु के रूप में ही लिखा जाता है; जैसे-आँगन, आँख, कुँआरा, चूंट आदि।

यह भी जानें-
अर्धचंद्राकार और अनुनासिक में अंतर-

हिंदी भाषा में अंग्रेज़ी के बहुत-से शब्द प्रयोग होते हैं। इनको बोलते समय इनकी ध्वनि 'आ' और 'ओ' के बीच की निकलती है। इसे दर्शाने के लिए अर्धचंद्राकार लगाया जाता है; जैसे- डॉक्टर, ऑफिस, कॉलेज आदि। इन शब्दों की ध्वनियाँ क्रमशः 'डा और डो', 'आ और ओ', 'का और को' के मध्य की हैं। इनके उच्चारण के समय मुँह आधा खुला रहता है। आगत भी कहा जाता है। ध्यान रहे कि अर्धचंद्राकार का प्रयोग अंग्रेजी शब्दों के लिए होता है जबकि अनुनासिक हिंदी की ध्वनि है।

## उपसर्ग – उपसर्ग के भेद

**उपसर्ग और उपसर्ग के भेद –** संस्कृत के ( Sanskrit ke Upsarg ), हिंदी के ( Hindi ke Upsarg ), उर्दू / विदेशी ( Urdu / Videshi Upsarg )

उपसर्ग शब्द दो शब्दों के मेल से बना है –

उप + सर्ग

↓

जोड़ना या निर्माण करना

**परिभाषा :** वे शब्दांश जो किसी मूल शब्द के पूर्व में लगकर नये शब्द का निर्माण करते हैं अर्थात् नये अर्थ का बोध कराते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं |

**Examples of Upsarg –**

**जैसे – "हार"**

**उपसर्ग** – आ

**मूल शब्द** – हार

आ + हार = आहार

**उपसर्ग** – उप

**मूल शब्द** – हार

उप + हार = उपहार

**उपसर्ग** – 'प्र'

**मूल शब्द** – हार

प्र + हार = प्रहार

**Upsarg or Upsarg ke bhed – Video Explanation**

## उपसर्ग के भेद (Upsarg ke bhed)

हिंदी भाषा में मुख्यत: तीन प्रकार के उपसर्ग प्रचलित हैं –

- संस्कृत के ( Sanskrit ke Upsarg )
- हिंदी के ( Hindi ke Upsarg )
- उर्दू / विदेशी ( Urdu / Videshi Upsarg )

*संस्कृत के उपसर्ग ( Sanskrit ke Upsarg )*

**जैसे – उपसर्ग – 'अप', 'अति', दुर्/दुस्**

**'अप'**

अप + मान = अपमान

अप + यश = अपयश

अप + शब्द = अपशब्द

**'अति'**

अति + प्रिय = अतिप्रिय

अति + रिक्त = अतिरिक्त

**दुर्/दुस्**

दुर् + गुण = दुर्गुण

दुर् + जन = दुर्जन

दुस् + साहस = दुस्साहस

*हिंदी के उपसर्ग ( Hindi ke Upsarg )*

**जैसे – उपसर्ग – 'अ', 'स'/'सु', 'अन'**

**'अ'**

अ + काज = अकाज

अ + टल = अटल

**'स'/'सु'**

स + पूत = सपूत

सु + यश = सुयश

**'अन'**

अन + पढ़ = अनपढ़

अन + मोल = अनमोल

*उर्दू / विदेशी उपसर्ग ( Urdu / Videshi Upsarg )*

**जैसे – उपसर्ग – 'बद', 'खुश', 'ना', 'हैड'**

**'बद'**

बद + नाम = बदनाम

बद + तमीज = बदतमीज

**'खुश'**

खुश + किस्मत = खुशकिस्मत

खुश + मिजाज = खुशमिजाज

**'ना'**

ना + लायक = नालायक

ना + पसन्द = नापसन्द

**'हैड'**

हैड + मास्टर = हैडमास्टर

हैड + बॉय = हैडबॉय

प्रत्यय – परिभाषा, प्रत्यय के प्रकार (Pratyay ke Prakar) – संस्कृत प्रत्यय ( Sanskrit Pratyay ), विदेशी प्रत्यय ( Videshi Pratyay ), हिंदी प्रत्यय ( Hindi Pratyay ) – कृत प्रत्यय (Krit Pratyay), तद्धित प्रत्यय (Tadhit Pratyay)

परिभाषा – वे शब्दांश जो किसी शब्द के अंत में लगकर उस शब्द के अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, अर्थात् नये अर्थ का बोध कराते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं |

जैसे =

मलि + **आवट** = मलिवट

समाज + **इक** = सामाजिक

सुगन्ध + **इत** = सुगन्धित

पढ़ + **आकू** = पढ़ाकू

## प्रत्यय के प्रकार (Pratyay ke Prakar)

हिंदी में प्रत्यय तीन प्रकार के होते हैं –

- संस्कृत प्रत्यय
- विदेशी प्रत्यय
- हिंदी प्रत्यय

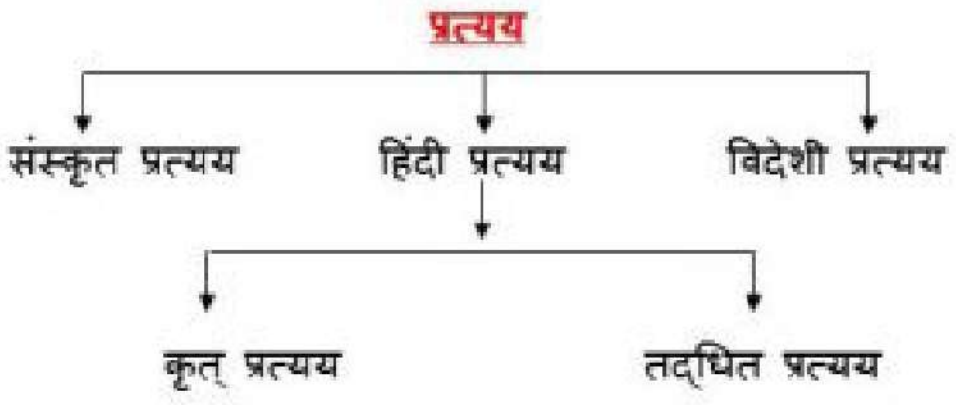


संस्कृत प्रत्यय ( Sanskrit Pratyay )

**'इक' प्रत्यय ( Pratyay ) →**

→ 'इक' प्रत्यय लगने पर शब्द के प्रारंभिक स्वर में इस प्रकार परिवर्तन होते है-

अ = आ

इ, ई, ए = ऐ

उ, ऊ, ओ = औ

ऋ = आर्

**जैसे –**

मनस् + **इक** = मानसिक

व्यवहार + **इक** = व्यावहारिक

समूह + **इक** = सामूहिक

नीति + **इक** = नैतिक

भूगोल + **इक** = भौगोलिक

**'एय' प्रत्यय →**

शब्द के अन्तिम वर्ण के स्वर को हटाकर उसमें 'एय' प्रत्यय जोड़ दिया जाता है | तथा 'इक' प्रत्यय की तरह शब्द के प्रथम स्वर में परिवर्तन कर देता है |

**जैसे –**

अग्नि + **एय** = आग्नेय

गंगा + **एय** = गांगेय (भीष्म)

राधा + **एय** = राधेय (कर्ण)

**'ईय' प्रत्यय →**

भारत + **ईय** = भारतीय

मानव + **ईय** = मानवीय

## विदेशी प्रत्यय ( Videshi Pratyay )

**'गर' प्रत्यय**

जादू + **गर** = जादूगर

बाज़ी + **गर** = बाज़ीगर

**'इश' प्रत्यय**

फ़रमा + **इश** = फ़रमाइश

पैदा + **इश** = पैदाइश

**'दान' प्रत्यय →**

रोशन + **दान** = रोशनदान

इत्र + **दान** = इत्रदान

**(स्थान) 'गाह' Pratya →**

बंदर + **गाह** = बंदरगाह

दर + **गाह** = दरगाह

**'गीर' प्रत्यय →**

राह + **गीर** = राहगीर

उठाई + **गीर** = उठाईगीर

## हिंदी प्रत्यय ( Hindi Pratyay )

(1) कृत प्रत्यय

(2) तद्धित प्रत्यय

**संज्ञा की रचना करने वाले कृत प्रत्यय →**

**'न' प्रत्यय → ( Na – Pratyay )**

बेल + **न** = बेलन

चंद + **न** = चंदन

**'आ' प्रत्यय – ( Aa Pratyay )→**

मेल + **आ** = मेला

झूल + **आ** = झूला

**वशिषण की रचना करने वाले कृत प्रत्यय →**

**'आलु' प्रत्यय →**

दया + **आलु** = दयालु

श्रद्धा + **आलु** = श्रद्धालु

**'ऊ' प्रत्यय →**

चाल + **ऊ** = चालू

डाक + **ऊ** = डाकू

कृत प्रत्यय *(Krit Pratyay)*

वे प्रत्यय जो धातु अथवा क्रिया के अन्त में लगकर नए शब्दों की रचना करते हैं उन्हें कृत प्रत्यय कहते हैं | कृत प्रत्ययों से संज्ञा तथा वशिषण शब्दों की रचना होती है |

कृत् प्रत्यय के प्रकार (Krit Pratyay ke Prakar)

1. कृत वाचक
2. कर्म वाचक
3. करण वाचक
4. भाव वाचक
5. क्रिया वाचक

**(1) कृत वाचक**

**'हार' Pratya →**

पालन + हार = पालनहार

'चख' (चाखन) + हार = चाखनहार

**'ता' प्रत्यय →**

दा + ता = दाता

ज्ञा + ता = ज्ञाता

**'अक्कड़' प्रत्यय →**

भूल + अक्कड़ = भुलक्कड़

घूम + अक्कड़ = घुमक्कड़

**(2) कर्म वाचक_कृत प्रत्यय**

**जैसे** – खेल + औना = खिलौना

**'ना' Pratya**

गा + ना = गाना

दा + ना = दाना

**(3) करण वाचक कृत प्रत्यय**

**जैसे –**

**'नी' प्रत्यय**

लेख + नी = लेखनी

कतर + नी = कतरनी

**'अन' प्रत्यय**

ढक + अन = ढक्कन

**'ऊ' प्रत्यय**

झाड़ + ऊ = झाड़ू

**'ई' Pratya**

गागर + ई = गगरी

**(4) भाव वाचक कृत प्रत्यय**

**'आऊ' प्रत्यय**

बकि + आऊ = बकिाऊ

टकि + आऊ = टकिाऊ

**'आई' प्रत्यय**

लड़ + आई = लड़ाई

चढ़ + आई = चढ़ाई

**'ई' प्रत्यय**

बोल + ई = बोली

धमक + ई = धमकी

**(5) क्रियावाचक कृत प्रत्यय**

**'कर' प्रत्यय**

देख + कर = देखकर

सुन + कर = सुनकर

**'ता' Pratya**

खा + ता = खाता

लखि + ता = लखिता

*तद्धति प्रत्यय (Tadhit Pratyay)*

क्रिया को छोड़कर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि में जुड़कर नए शब्द बनाने वाले प्रत्यय तद्धति प्रत्यय कहलाते हैं |

**जैसे** –

मानव + ता = मानवता

जादू + गर = जादूगर

बाल + पन = बालपन

लखि + आई = लखिाई

तद्धति प्रत्यय के प्रकार (Tadhit Pratyay ke Prakar)

(1) कर्त्तृवाचक तद्धति प्रत्यय

(2) भाववाचक तद्धति प्रत्यय

(3) सम्बन्ध वाचक तद्धति प्रत्यय

(4) गुणवाचक तद्धति प्रत्यय

(5) स्थानवाचक तद्धति प्रत्यय

(6) ऊनतावाचक तद्धति प्रत्यय

(7) स्त्रीवाचक तद्धति प्रत्यय

**1. कर्त्तृवाचक तद्धति प्रत्यय**

**'आर' Pratya →**

सोना + आर = सुनार

कुम्ह + आर = कुम्हार

गाँव + आर = गँवार

**'ई' Pratya →**

तेल + ई = तेली

भेद + ई = भेदी

**'वाला' Pratya →**

टोपी + वाला = टोपीवाला

गाड़ी + वाला = गाड़ीवाला

**2. भाववाचक तद्धति प्रत्यय**

**जैसे** –

आहट – कडवाहट

ता – सुन्दरता, मानवता, दुर्बलता

आपा – मोटापा, बुढ़ापा

**3. सम्बन्ध वाचक तद्धति प्रत्यय**

**'इक' Pratya →**

समाज + इक = सामाजकि

शरीर + इक = शारीरकि

**'आलु' प्रत्यय→**

कृपा + आलु = कृपालु

दया + आलु = दयालु

**'ईला' Pratya →**

रंग + ईला = रंगीला

ज़हर + ईला = ज़हरीला

**4. गुणवाचक तद्धति प्रत्यय**

**जैसे** –

वान – गुणवान, धनवान, बलवान

ईय – भारतीय, राष्ट्रीय, नाटकीय

आ – सूखा, रुखा, भूखा

**5. स्थानवाचक तद्धति प्रत्यय**

**जैसे** –

वाला – शहरवाला, गाँववाला, कस्बेवाला

इया – उदयपुरिया, जयपुरिया, मुंबइया

ई – रूसी, चीनी, राजस्थानी

**6. ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय**

**'इया' प्रत्यय**

लाठी + इया = लठिया

लोटा + इया = लुटिया

**'ई' प्रत्यय**

टोकरा + ई = टोकरी

नाला + ई = नाली

**'ओला' प्रत्यय**

खाट + ओला = खटोला

बात + ओला = बतोला

**7. स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय**

**जैसे** –

आइन – पंडिताइन, ठकुराइन

इन – मालिन, कुम्हारिन, जोगिन

नी – मोरनी, शेरनी, नन्दनी

आनी – सेठानी, पटरानी, जेठानी

**वाक्य की परिभाषा** – शब्दों का सार्थक समूह, जो कि व्यवस्थित क्रम में हो तथा वक्ता के आशय को स्पष्ट करता हो वाक्य कहलाता है।

जैसे→

1. राधा गाना गाएगी।
2. मोहन आगरा जा रहा है।

वाक्य के अंग

**1.** उद्देश्य

**2.** विधेय

**1.** उद्देश्य

→ कर्ता, कर्ता का विस्तार उद्देश्य कहलाता है।

**2. विधेय**

→ कर्ता के विषय में जो कुछ कहा जाए उसे विधेय कहते है। अथवा कर्ता तथा कर्ता के विस्तार के बाद जो कुछ भी शेष रहता है, वह विधेय कहलाता है।

**जैसे →**

1. राम ने रावण को मारा

इस वाक्य में

राम = कर्ता

ने = कर्ता का विस्तार

रावण को मारा = विधेय

2. मेरा भाई प्रशान्त धार्मिक पुस्तकें अधिक पढ़ता है।

मेरा भाई प्रशान्त = उद्देश्य

जिसमें 'प्रशान्त' = कर्ता

मेरा भाई = कर्ता का विशेषण अर्थात् 'कर्ता का विस्तार'

## वाक्य और वाक्य के भेद

Vakya or Vakya ke bhed in Hindi Class 10 – वाक्य की परिभाषा, वाक्य के अंग – उद्देश्य, विधेय, वाक्य के भेद – अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद और रचना के आधार पर वाक्य के भेद

**वाक्य की परिभाषा** – शब्दों का सार्थक समूह, जो कि व्यवस्थित क्रम में हो तथा वक्ता के आशय को स्पष्ट करता हो वाक्य कहलाता है।

**जैसे→**

1. राधा गाना गाएगी।
2. मोहन आगरा जा रहा है।

**वाक्य के अंग**

**1. उद्देश्य**

**2. विधेय**

**1. उद्देश्य**

→ कर्ता, कर्ता का विस्तार उद्देश्य कहलाता है।

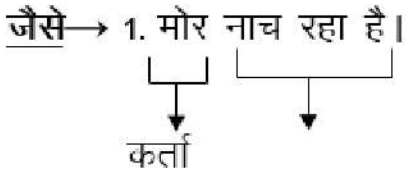


**2. विधेय**

→ कर्ता के विषय में जो कुछ कहा जाए उसे विधेय कहते है। अथवा कर्ता तथा कर्ता के विस्तार के बाद जो कुछ भी शेष रहता है, वह विधेय कहलाता है।

**जैसे →**

1. राम ने रावण को मारा

इस वाक्य में

राम = कर्ता

ने = कर्ता का विस्तार

रावण को मारा = विधेय

2. मेरा भाई प्रशान्त धार्मिक पुस्तकें अधिक पढ़ता है।

मेरा भाई प्रशान्त = उद्देश्य

जिसमें 'प्रशान्त' = कर्ता

मेरा भाई = कर्ता का विशेषण अर्थात् 'कर्ता का विस्तार'

## वाक्य के भेद ( Vakya ke bhed)

1. अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद
2. रचना के आधार पर वाक्य के भेद

अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद

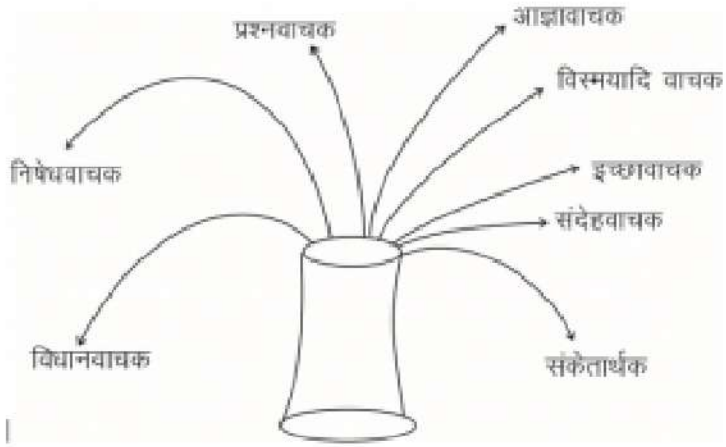


**अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद→**

*विधानवाचक वाक्य*

जिस वाक्य में किसी काम का होना पाया जाता है, वह विधानवाचक वाक्य कहलाता है।

**जैसे →** 1. मैं खाता हूँ। (काम का होना)

2. राधा पढ़ती है। (काम का होना)

*निषेधवाचक वाक्य*

जिस वाक्य में किसी बात के या किसी काम के न होने का बोध होता है वहाँ निषेधात्मक वाक्य होता है।

**जैसे →** 1. सड़क पर मत भागो।

2. सीता ने खाना नहीं खाया।

3. रेखा आज विद्यालय नहीं गयी।

*प्रश्नवाचक वाक्य*

जिस वाक्य का प्रयोग प्रश्न पूछने में किया जाए उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं।

**जैसे →** 1. राम क्या लिख रहा है ?

2. वेदान्त क्या बना रहा है ?

3. नीतू क्या खा रही है ?

*आज्ञावाचक वाक्य*

जिस वाक्य में आज्ञा, उपदेश, अनुमति का बोध हो वह आज्ञावाचक वाक्य होता है।

**जैसे →** 1. राम पढ़ाई करो।

2. राम नीचे बैठो।

*विस्मयादिबोधक वाक्य*

जिस वाक्य में 'हर्ष', 'शोक', 'घृणा', व 'विस्मय' आदि भाव प्रकट होते है वह विस्मयादिबोधक वाक्य कहलाता है।

**जैसे →** 1. वाह! कितना सुन्दर दृश्य है।

2. अरे! यह क्या हो गया।

3. शाबाश! क्या शतक बनाया।

*इच्छावाचक वाक्य*

जिस वाक्य में किसी आशीर्वाद, इच्छा, कामना का बोध हो, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं।

**जैसे** → 1. आपकी यात्रा मंगलमय हो।

2. ईश्वर सबका भला करें(इच्छा)

*संदेह सूचक वाक्य*

जिस वाक्य में किसी काम के पूरा होने में संदेह या संभावना का भाव प्रकट हो, उसे संदेहवाचक वाक्य कहते हैं।

**जैसे** → 1. शायद वे कल आएँ।

2. शायद पिताजी आ चुके होंगे।

*संकेतार्थक वाक्य*

जिस वाक्य में संकेत या शर्त हो वह संकेतार्थक वाक्य कहलाता है।

**जैसे** → 1. यदि वर्षा रूक गई तो स्कूल जाऊँगी।

2. वर्षा न होती तो, फसल सूख जाती।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्नः 1.

नीचे दिए गए शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करते हुए शब्दों का मानक रूप लिखिए -

नालँदा, अँतर, संक्षिप्त, अंबर, चंद्रमा, संघर्ष, नितिँत, भाँति, यन्त्र, सँस्कार, अँक, सम्बन्ध, गङ्गा, दीनबन्धु, अन्दर, मन्त्रालय,

खण्डित, छन्द, हिन्दुस्तान, अँगली, तँगी, तन्त्र, तम्बाकू, पँखुड़ी, कम्पन, दंगल, पँकज, दैत्य, बन्डल, धन्धा, पन्चायत, बँजारा।

उत्तर:

नालंदा, अंतर, संक्षिप्त, अंबर, चंद्रमा, संघर्ष, नितांत, भ्रांति, यंत्र, संस्कार, अंक, संबंध, गंगा, दीनबंधु, अंदर, मंत्रालय, खंडित,

छंद, हिंदुस्तान, जंगली, तंगी, तंत्र, तंबाकू, पंखुड़ी, कंपन, दंगल, पंकज, दंत्य, बंडल, धंधा, पंचायत, बंजारा।

प्रश्नः 2.
नीचे दिए गए शब्दों में उचित स्थान पर अनुनासिक का प्रयोग करके शब्दों को पुनः लिखिए-
बंटवारा, संकरा, आंख, हंसमुख, अंगड़ाई, आंचल, सांस, कहां, ऊंट, आंवला, ऊंघना, आंधी, कांटा, गांव, चांदनी, आंसू, ऊंचाई, छंटनी, जांच, टांग, डांट, पहुंचना।
उत्तर:
बँटवारा, सँकरा, आँख, हँसमुख, अंगड़ाई, आँचल, साँस, कहाँ, ऊँट, आँवला, ऊँघना, आँधी, काँटा, गाँव, चाँदनी, आँसू, ऊँचाई, छंटनी, जाँच, टाँग, डाँट, पहुँचना।

अभ्यास –

प्रश्नः 3.
नीचे दिए गए शब्दों में उचित अनुस्वार लगाकर पुनः लिखिए-

1. सतरी ……
2. रग ……..
3. मगल ……..
4. चपक ……..
5. गाधारी ……..
6. प्रबध ……..
7. कबल ……..
8. कपन ……..
9. सगति ……..
10. वश ……..

उत्तर:

प्रश्नः 4.
निम्नलिखित शब्दों में उचित अनुनासिक का प्रयोगकर पुनः लिखिए-

1. साझ ……..
2. स्थितिया ……..

3. बासुरी ……..
4. याऊ ……..
5. धुंधला ……..
6. पाच ……..
7. छूट ……..
8. आवला ……..
9. फादना ……..
10. गाव ……..

उत्तर:

प्रश्नः 5.
निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थान पर लगे अनुनासिक शब्द छाँटिए-

1. अंधकार, चड़िया, ब्रह्मांड
2. आँच, महँगाई, खुशियाँ
3. बँद, हँसी, मुँह
4. चंद्रशेखर, ऊँचाई, व्यंजन
5. पाँचवा, सँगम, बाँसुरी
6. चंचल, भयँकर, कारवाँ
7. साँसारिक, कठिनाइयाँ, सूंघना
8. वसँजय, जहाँ, आँगन
9. स्वयँ, दाँत, ढूँढना
10. चंपक, संयुक्त, अँधेरा
11. सँभव, हँसना, साँह
12. कुंआ, कँपन, आँख
13. बूंद, आँगन, दिनांक
14. आँख, चड़ियाँ, पँखा
15. अंतिम, घूघट, काँटा

# हिंदी पाठ योजना

Mount Abu Public School

H-Block, Sector-18, Rohini, New Delhi-110085 India

विषय – हिंदी

उपविषय --अपठित गद्यांश

दिनांक-18/1/2021-23/1/2021

# (खंड क ) अपठित गद्यांश

वह गद्यांश जिसका अध्ययन हिंदी की पाठ्यपुस्तक में नहीं किया गया है अपठित गद्यांश कहलाता है।

<u>विशिष्ट उद्देश्य</u>

- परीक्षा में इन गद्यांशों से विद्यार्थी की भावग्रहण क्षमता का मूल्यांकन किया जाता है।
- अपठित गद्यांश को हल करने संबंधी आवश्यक बिंदु विद्यार्थी को गद्यांश ध्यान से पढ़ना चाहिए ताकि उसका अर्थ स्पष्ट हो सके।
- गद्यांश से संबंधित प्रश्नों का अध्ययन करेंगे।फिर इन प्रश्नों के संभावित उत्तर गद्यांश में खोजेंगे।
- प्रश्नों के उत्तर गद्यांश पर आधारित होने चाहिए।उत्तरों की भाषा सहज, सरल व स्पष्ट होनी चाहिए।

# उदाहरण के लिए अपठित गद्यांश

- जब समाचार-पत्रों में सर्वसाधारण के लिए कोई सूचना प्रकाशित की जाती है तो उसको विज्ञापन कहते हैं। यह सूचना नौकरियों से संबंधित हो सकती है, खाली मकान को किराये पर उठाने के संबंध में हो सकती है या किसी औषधि के प्रचार से संबंधित हो सकती है। कुछ लोग विज्ञापन के आलोचक हैं। वे इसे निरर्थक मानते हैं। उनका मानना है कि यदि कोई वस्तु यथार्थ रूप में अच्छी है तो वह बिना किसी विज्ञापन के ही लोगों के बीच लोकप्रिय हो जाएगी जबकि खराब वस्तुएँ विज्ञापन की सहायता पाकर भी भंडाफोड़ होने पर बहुत दिनों तक टिक नहीं पाएँगी, परंतु लोगों कि यह सोच ग़लत है।

- आज के युग में मानव का प्रचार-प्रसार का दायरा व्यापक हो चुका है। अत: विज्ञापनों का होना अनिवार्य हो जाता है। किसी अच्छी वस्तु की वास्तविकता से परिचय पाना आज के विशाल संसार में विज्ञापन के बिना नितांत असंभव है। विज्ञापन ही वह शक्तिशाली माध्यम है जो हमारी ज़रूरत की वस्तुएँ प्रस्तुत करता है, उनकी माँग बढ़ाता है और अंततः हम उन्हें जुटाने चल पड़ते हैं। यदि कोई व्यक्ति या कंपनी किसी वस्तु का निर्माण करती है, उसे उत्पादक कहा जाता है। उन वस्तुओं और सेवाओं को ख़रीदने वाला उपभोक्ता कहलाता है। इन दोनों को जोड़ने का कार्य विज्ञापन करता है।

- वह उत्पादक को उपभोक्ता के संपर्क में लाता है तथा माँग और पूर्ति में संतुलन स्थापित करने का प्रयत्न करता है। पुराने ज़माने में किसी वस्तु की अच्छाई का विज्ञापन मौखिक तरीके से होता था। काबुल का मेवा, कश्मीर की ज़री का काम, दक्षिण भारत के मसाले आदि वस्तुओं की प्रसिद्धि मौखिक रूप से होती थी। उस समय आवश्यकता भी कम होती थी तथा लोग किसी वस्तु के अभाव की तीव्रता का अनुभव नहीं करते थे। आज समय तेज़ी का है। संचार-क्रांति ने जिंदगी को गति दे दी है। मनुष्य की. आवश्यकताएँ बढ़ती जा रही हैं। इसलिए विज्ञापन मानव-जीवन की अनिवार्यता बन गया है।

# पढ़ें गये गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

- प्रश्नः 1.गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
- उत्तरःशीर्षक-विज्ञापन का महत्त्व।
- प्रश्नः 2.विज्ञापन किसे कहते हैं ? वह मानव जीवन का अनिवार्य अंग क्यों माना जाता है?
- उत्तरःसमाचार पत्रों में सर्वसाधारण के लिए प्रकाशित सूचना विज्ञापन कहलाती है। विज्ञापन के जरिए लोगों की आवश्यकताएँ पूरी होती हैं तथा मानव का प्रचार-प्रसार का दायरा व्यापक हो चुका है। इसलिए वह मानव जीवन का अनिवार्य अंग माना जाता है।

- प्रश्नः 3.उत्पादक किसे कहते हैं ? उत्पादक-उपभोक्ता संबंधों को विज्ञापन कैसे प्रभावित करता है?
- उत्तरःवस्तु का निर्माण करने वाला व्यक्ति या कंपनी को उत्पादक कहा जाता है। विज्ञापन उत्पादक व उपभोक्ता को संपर्क में लाकर माँग व पूर्ति में संतुलन स्थापित करने का कार्य करता है।
- प्रश्नः 4.किसी विज्ञापन का उद्देश्य क्या होता है? जीवन में इसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।
- उत्तरःविज्ञापन का उद्देश्य वस्तुओं को प्रस्तुत करके माँग बढ़ाना है। इसके कारण ही हम खरीददारी करते हैं।

- प्रश्नः 5.पुराने समय में विज्ञापन का तरीका क्या था? वर्तमान तकनीकी युग ने इसे किस प्रकार प्रभावित किया है?
- उत्तरःपुराने ज़माने में विज्ञापन का तरीका मौखिक था। उस समय आवश्यकता कम होती थी तथा वस्तु के अभाव की तीव्रता भी कम थी। आज तेज़ संचार का युग है। इसने मानव की ज़रूरत बढ़ा दी है।
- प्रश्नः 6.विज्ञापन के आलोचकों के विज्ञापन के संदर्भ में क्या विचार हैं?
- उत्तरःविज्ञापन के आलोचक इसे निरर्थक मानते हैं। उनका कहना है कि अच्छी चीज़ स्वयं ही लोकप्रिय हो जाती हैं जबकि खराब वस्तुएँ विज्ञापन का सहारा पाकर भी लंबे समय नहीं चलती।

- प्रश्नः 7.आज की भाग-दौड़ की ज़िन्दगी में विज्ञापन का महत्त्व उदाहरण देकर समझाइए।
- उत्तरःआज मानव का दायरा व्यापक हो गया है। उसके पास अधिक संसाधन है। विज्ञापन ही अपनी ज़रूरत पूरी कर सकता है।

# हल करने हेतू अपठित गद्यांश

- 3. राष्ट्र केवल ज़मीन का टुकड़ा ही नहीं बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत होती है जो हमें अपने पूर्वजों से परंपरा के रूप में प्राप्त होती है। जिसमें हम बड़े होते हैं, शिक्षा पाते हैं और साँस लेते हैं-हमारा अपना राष्ट्र कहलाता है और उसकी पराधीनता व्यक्ति की परतंत्रता की पहली सीढ़ी होती है। ऐसे ही स्वतंत्र राष्ट्र की सीमाओं में जन्म लेने वाले व्यक्ति का धर्म, जाति, भाषा या संप्रदाय कुछ भी हो, आपस में स्नेह होना स्वाभाविक है। राष्ट्र के लिए जीना और काम करना, उसकी स्वतंत्रता तथा विकास के लिए काम करने की भावना राष्ट्रीयता कहलाती है।

- जब व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से धर्म, जाति, कुल आदि के आधार पर व्यवहार करता है तो उसकी दृष्टि संकुचित हो जाती है। राष्ट्रीयता की अनिवार्य शर्त है-देश को प्राथमिकता, भले ही हमें 'स्व' को मिटाना पड़े। महात्मा गांधी, तिलक, सुभाषचन्द्र बोस आदि के कार्यों से पता चलता है कि राष्ट्रीयता की भावना के कारण उन्हें अनगिनत कष्ट उठाने पड़े किंतु वे अपने निश्चय में अटल रहे। व्यक्ति को निजी अस्तित्व कायम रखने के लिए पारस्परिक सभी सीमाओं की बाधाओं को भुलाकर कार्य करना चाहिए तभी उसकी नीतियाँ-रीतियाँ राष्ट्रीय कही जा सकती हैं।

- जब-जब भारत में फूट पड़ी, तब-तब विदेशियों ने शासन किया। चाहे जातिगत भेदभाव हो या भाषागत-तीसरा व्यक्ति उससे लाभ उठाने का अवश्य यत्न करेगा। आज देश में अनेक प्रकार के आंदोलन चल रहे हैं। कहीं भाषा को लेकर संघर्ष हो रहा है तो कहीं धर्म या क्षेत्र के नाम पर लोगों को निकाला जा रहा है जिसका परिणाम हमारे सामने है। आदमी अपने अहं में सिमटता जा रहा है। फलस्वरूप राष्ट्रीय बोध का अभाव परिलक्षित हो रहा है।

# गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- प्रश्नः 1.गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।
- प्रश्नः 2.‘स्व’ से क्या तात्पर्य है, उसे मिटाना क्यों आवश्यकहै?
- प्रश्नः 3.आशय स्पष्ट कीजिए-“राष्ट्र केवल ज़मीन का टुकड़ा ही नहीं बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत भी है।”
- प्रश्नः 4.राष्ट्रीयता से लेखक का क्या आशय है ? गद्यांश में चर्चित दो राष्ट्रभक्तों के नाम लिखिए।
- प्रश्नः 5.राष्ट्रीय बोध को अभाव किन-किन रूपों में दिखाई देता है?

- प्रश्नः 6.राष्ट्र के उत्थान में व्यक्ति का क्या स्थान है? उदाहरण सहित लिखिए।
- प्रश्नः 7.व्यक्तिगत स्वार्थ एवं राष्ट्रीय भावना परस्पर विरोधी तत्व हैं। कैसे? तर्क सहित उत्तर लिखिए।

# हिंदी पाठ योजना 3

Mount Abu Public School

H-Block, Sector-18, Rohini, New Delhi-110085 India

- विषय-हिन्दी
- उपविषय- अपठित गद्यांश
- दिनांक-18/01/2021-23/01/2021

# (खंड क ) अपठित गद्यांश

वह गद्यांश जिसका अध्ययन हिंदी की पाठ्यपुस्तक में नहीं किया गया है अपठित गद्यांश कहलाता है।

<u>विशिष्ट उद्देश्य</u>

- परीक्षा में इन गद्यांशों से विद्यार्थी की भावग्रहण क्षमता का मूल्यांकन किया जाता है।
- अपठित गद्यांश को हल करने संबंधी आवश्यक बिंदु विद्यार्थी को गद्यांश ध्यान से पढ़ना चाहिए ताकि उसका अर्थ स्पष्ट हो सके।
- गद्यांश से संबंधित प्रश्नों का अध्ययन करेंगे।फिर इन प्रश्नों के संभावित उत्तर गद्यांश में खोजेंगे।
- प्रश्नों के उत्तर गद्यांश पर आधारित होने चाहिए।उत्तरों की भाषा सहज, सरल व स्पष्ट होनी चाहिए।

# उदाहरण के लिए अपठित गद्यांश

- 3. राष्ट्र केवल ज़मीन का टुकड़ा ही नहीं बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत होती है जो हमें अपने पूर्वजों से परंपरा के रूप में प्राप्त होती है। जिसमें हम बड़े होते हैं, शिक्षा पाते हैं और साँस लेते हैं-हमारा अपना राष्ट्र कहलाता है और उसकी पराधीनता व्यक्ति की परतंत्रता की पहली सीढ़ी होती है। ऐसे ही स्वतंत्र राष्ट्र की सीमाओं में जन्म लेने वाले व्यक्ति का धर्म, जाति, भाषा या संप्रदाय कुछ भी हो, आपस में स्नेह होना स्वाभाविक है। राष्ट्र के लिए जीना और काम करना, उसकी स्वतंत्रता तथा विकास के लिए काम करने की भावना राष्ट्रीयता कहलाती है।

- जब व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से धर्म, जाति, कुल आदि के आधार पर व्यवहार करता है तो उसकी दृष्टि संकुचित हो जाती है। राष्ट्रीयता की अनिवार्य शर्त है-देश को प्राथमिकता, भले ही हमें 'स्व' को मिटाना पड़े। महात्मा गांधी, तिलक, सुभाषचन्द्र बोस आदि के कार्यों से पता चलता है कि राष्ट्रीयता की भावना के कारण उन्हें अनगिनत कष्ट उठाने पड़े किंतु वे अपने निश्चय में अटल रहे। व्यक्ति को निजी अस्तित्व कायम रखने के लिए पारस्परिक सभी सीमाओं की बाधाओं को भुलाकर कार्य करना चाहिए तभी उसकी नीतियाँ-रीतियाँ राष्ट्रीय कही जा सकती हैं।

- जब-जब भारत में फूट पड़ी, तब-तब विदेशियों ने शासन किया। चाहे जातिगत भेदभाव हो या भाषागत-तीसरा व्यक्ति उससे लाभ उठाने का अवश्य यत्न करेगा। आज देश में अनेक प्रकार के आंदोलन चल रहे हैं। कहीं भाषा को लेकर संघर्ष हो रहा है तो कहीं धर्म या क्षेत्र के नाम पर लोगों को निकाला जा रहा है जिसका परिणाम हमारे सामने है। आदमी अपने अहं में सिमटता जा रहा है। फलस्वरूप राष्ट्रीय बोध का अभाव परिलक्षित हो रहा है।

# गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्नः 1.गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

उत्तरःशीर्षक-राष्ट्र और राष्ट्रीयता।

प्रश्नः 2.‘स्व’ से क्या तात्पर्य है, उसे मिटाना क्यों आवश्यक है?

उत्तरः‘स्व’ से तात्पर्य है-अपना। केवल अपने बारे में सोचने वाले व्यक्ति की दृष्टि संकुचित होती है। वह राष्ट्र का विकास नहीं कर सकता। अतः ‘स्व’ को मिटाना आवश्यक है।

- प्रश्नः 3.आशय स्पष्ट कीजिए-“राष्ट्र केवल ज़मीन का टुकड़ा ही नहीं बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत भी है।”
- उत्तरःइसका अर्थ है कि राष्ट्र केवल ज़मीन का टुकड़ा नहीं है। वह व्यक्तियों से बसा हुआ क्षेत्र है जहाँ पर संस्कृति है, विचार है। वहाँ जीवनमूल्य स्थापित हो चुके होते हैं।
- प्रश्नः 4.राष्ट्रीयता से लेखक का क्या आशय है ? गद्यांश में चर्चित दो राष्ट्रभक्तों के नाम लिखिए।
- उत्तरःराष्ट्रीयता से लेखक का आशय है कि देश के लिए जीना और काम करना, उसकी स्वतंत्रता व विकास के लिए काम करने की भवना होना। लेखक ने महात्मा गांधी व सुभाषचन्द्र बोस का नाम लिया है।

- प्रश्नः 5.राष्ट्रीय बोध को अभाव किन-किन रूपों में दिखाई देता है?
- उत्तरःआज देश में अनेक प्रकार के आंदोलन चल रहे हैं, कहीं भाषा के नाम पर तो कहीं धर्म या क्षेत्र के नाम पर। इसके कारण व्यक्ति अपने अहं में सिमटता जा रहा है। अतः राष्ट्रीय बोध का अभाव दिखाई दे रहा है।
- प्रश्नः 6.राष्ट्र के उत्थान में व्यक्ति का क्या स्थान है? उदाहरण सहित लिखिए।
- उत्तरःराष्ट्र के उत्थान में व्यक्ति का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जब व्यक्ति अपने अहं को त्याग कर देश के विकास के लिए कार्य करता है तो देश की प्रगति होती है। महात्मा गांधी, तिलक, सुभाषचन्द्र बोस आदि के कार्यों से देश आजाद हुआ।

# अपठित गद्यांश हल कीजिए

- 4. भारत प्राचीनतम संस्कृति का देश है। यहाँ दान पुण्य को जीवनमुक्ति का अनिवार्य अंग माना गया है। जब दान देने को धार्मिक कृत्य मान लिया गया तो निश्चित तौर पर दान लेने वाले भी होंगे। हमारे समाज में भिक्षावृत्ति की ज़िम्मेदारी समाज के धर्मात्मा, दयालु व सज्जन लोगों की है। भारतीय समाज में दान लेना व दान देना-दोनों धर्म के अंग माने गए हैं। कुछ भिखारी खानदानी होते हैं क्योंकि पुश्तों से उनके पूर्वज धर्म स्थानों पर अपना अड्डा जमाए हुए हैं।

- कुछ भिखारी अंतर्राष्ट्रीय स्तर के हैं जो देश में छोटी-सी विपत्ति आ जाने पर भीख का कटोरा लेकर भ्रमण के लिए निकल जाते हैं। इसके अलावा अनेक श्रेणी के और भी भिखारी होते हैं। कुछ भिखारी परिस्थिति से बनते हैं तो कुछ बना दिए जाते हैं। कुछ शौकिया भी। इस व्यवसाय में आ गए हैं। जन्मजात भिखारी अपने स्थान निश्चित रखते हैं। कुछ भिखारी अपनी आमदनी वाली जगह दूसरे भिखारी को किराए पर देते हैं। आधुनिकता के कारण अनेक वृद्ध मज़बूरीवश भिखारी बनते हैं।

- गरीबी के कारण बेसहारा लोग भीख माँगने लगते हैं। काम न मिलना भी भिक्षावृत्ति को जन्म देता है। कुछ अपराधी बच्चों को उठा ले जाते हैं तथा उनसे भीख मँगवाते हैं। वे इतने हैवान हैं कि भीख माँगने के लिए बच्चों का अंग-भंग भी कर देते हैं। भारत में भिक्षा का इतिहास बहुत पुराना है। देवराज इंद्र व विष्णु श्रेष्ठ भिक्षुकों में थे। इंद्र ने कर्ण से अर्जुन की रक्षा के लिए उनके कवच व कुंडल ही भीख में माँग लिए। विष्णु ने वामन अवतार लेकर भीख माँगी।

- धर्मशास्त्रों ने दान की महिमा का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जिसके कारण भिक्षावृत्ति को भी धार्मिक मान्यता मिल गई। पूजा-स्थल, तीर्थ, रेलवे स्टेशन, बसस्टैंड, गली-मुहल्ले आदि हर जगह भिखारी दिखाई देते हैं। इस कार्य में हर आयु का व्यक्ति शामिल है। साल-दो साल के दुध मुँहे बच्चे से लेकर अस्सी-नब्बे वर्ष के बूढ़े तक को भीख माँगते देखा जा सकता है। भीख माँगना भी एक कला है, जो अभ्यास या सूक्ष्म निरीक्षण से सीखी जा सकती है।

- अपराधी बाकायदा इस काम की ट्रेनिंग देते हैं। भीख रोकर, गाकर, आँखें दिखाकर या हँसकर भी माँगी जाती है। भीख माँगने के लिए इतना आवश्यक है कि दाता के मन में करुणा जगे। अपंगता, कुरूपता, अशक्तता, वृद्धावस्था आदि देखकर दाता करुणामय होकर परंपरानिर्वाह कर पुण्य प्राप्त करता है।

- प्रश्नः 1.गद्यांश का समुचित शीर्षक दीजिए।
- उत्तरःशीर्षक-भिक्षावृत्ति एक व्यवसाय।
- प्रश्नः 2.“भारत में भिक्षा का इतिहास प्राचीन है”-सप्रमाण सिद्ध कीजिए।
- उत्तरःभारत में भिक्षावृत्ति का इतिहास पुराना है। देवराज इंद्र व विष्णु श्रेष्ठ भिक्षुकों में हैं। इंद्र ने अर्जुन की रक्षा के लिए कर्ण से कवच व कुंडल की भिक्षा माँगी जबकि विष्णु ने वामन अवतार में भीख माँगी। धर्मशास्त्रों से भिक्षावृत्ति को धार्मिक मान्यता मिली।

- प्रश्नः 3.“भीख माँगना एक कला है”-इस कला के विविध रूपों का उल्लेख कीजिए।
- उत्तरःभीख माँगना एक कला है जो अभ्यास व सूक्ष्म निरीक्षण से सीखी जाती है। रोकर, गाकर, आँखें दिखाकर या हँसकर, अपंगता, अशक्तता आदि के जरिए दूसरे के मन में करुणा जगाकर भीख माँगी जाती है।
- प्रश्नः 4.समाज में भिक्षावृत्ति बढ़ाने में हमारी मान्यताएँ किस प्रकार सहायक होती हैं ?
- उत्तरःभिक्षावृत्ति बढ़ाने में हमारी धार्मिक मान्यताएँ सहायक हैं। भारत में दान देना व लेना दोनों धर्म के अंग माने गए हैं। दान-पुण्य को जीवनमुक्ति का अनिवार्य अंग माना गया है। अतः भिक्षुकों का होना लाजिमी है।

- प्रश्नः 5.भिखारी व्यवसाय के विभिन्न स्वरूपों का उल्लेख कीजिए।
- उत्तरःभिखारी व्यवसाय में कुछ भिखारी खानदानी हैं जो कई पीढियों से धर्मस्थानों पर अपना अड्डा जमाए हुए हैं। कुछ अंतर्राष्ट्रीय भिखारी हैं जो देश में छोटी-सी विपत्ति आने पर भीख माँगने विदेश चले जाते हैं। कुछ परिस्थितिवश तथा कुछ अपराधियों द्वारा बना दिए जाते हैं। कुछ शौकिया भिखारी भी होते हैं।

- प्रश्नः 6.भिखारी दाता के मन में किस भाव को जगाते हैं और क्यों?
- उत्तरःभिखारी अपनी अशक्तता, कुरूपता, अपंगता, वृद्धावस्था आदि के जरिए दाता के मन में करुणाभाव जगाते हैं ताकि वे दान देकर अपनी परंपरा का निर्वाह कर सकें।
- प्रश्नः 7.आपके विचार से भिक्षावृत्ति से कैसे छुटकारा पाया जा सकता है?
- उत्तरःमेरे विचार से भिक्षावृत्ति से छुटकारा तभी मिल सकता है जब उसे धर्म के प्रभाव से अलग किया जाएगा। कानून व सामाजिक आंदोलन भी सहायक हो सकते हैं।